कोंकणी कवि प्रकाश पाडगाँवकार[1] की दो कविताएँ

हम

अनुवाद ☐ **चन्द्रलेखा डि सौझा**

आच्छादित करता है
अंधेरा
आकाश को,
नक्षत्रों के अक्षरों को लेकर…. ।

रात्रि तो है
नक्षत्रों के अक्षरों से
लिखी हुई—किताब
सीखनी है मुझे अब
इस किताब की भाषा……..

भरना है हमें—
अपने ही उजाले को लेकर
अपना ही रिक्ताकाश ।

हम : लगातार
फूँक रहे हैं अँधेरे की नली को
धँसते जाते हैं लगातार
अपने ही अँधेरे में……… ।

१—प्रकाश पांडगाँवकार को 'हांव मनीस अश्वत्थामा' कृति पर कुछ समय पूर्व साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था । उनकी दो कविताओं का अनुवाद चन्द्रलेखा डि सौझा ने किया है, जो स्वयं हिन्दी में अच्छी कविताएँ लिखती हैं ।

सूर्य का दुःख

□ प्रकाश वाडगांवकार

मैंने जीवन के अंधकार में
अंधकार के नक्षत्रों में
आती हुई पुकार को सुना—

सूर्य अपने प्रकाशमय हाथ
मेरी ओर पसारकर
माँग रहा है मुझ से अंधकार की भिक्षा…… ।

मैंने सूर्य से कहा :
शहर उदित होता है
तुम्हारे आने से—
शहर अस्त होता है
तुम्हारे जाने से
तुम स्वयं ही हो प्रकाश पुंज
तुम्हारी किरणों से
सिरजती है ऋतु अपने आपको
होती है रसमयी–ऋतु अपने आप में
फिर—
क्यों मांग रहे हो
तुम मुझ से
अंधकार की भिक्षा…… ।

सूर्य ने कहा—
अभिशाप है–प्रकाश का–मेरे जीवन में
देख नहीं सकता
अपने प्रकाशमय जीवन में
अंधकार को कभी भी मैं—
नहीं है मुझे अनुभव अंधकार का
अँधेरा क्या चीज है ?

P.T.O

मुझे मालूम ही नहीं
रात्रि के आकाश की गहनता का
मुझे होता ही नहीं एहसास अपने जीवन में…… ।
मैंने कहा :
सहेजते हुए दुःख को जैसे
टपकता है आंखों से दर्द का राग
वैसे ही
अंधकार के मौन महासागर में
बहती हैं तारों की तेजस्वी लहरें
अंधकार के सहयात्री रूपों में
बन्द कर लो अगर
तुम्हारी आंखों को क्षणभर के लिए
दिखाई देगा तुम्हें हर जगह
अंधकार ही अंधकार
गहनतम अंधकार, जीवन में…… ।

सुनकर यह
सूर्य ने कहा :
भाग्यवान मनुष्य
असम्भव है ऐसा
मैं स्वयंभू प्रकाश हूँ
प्रकाश के अतिरिक्त
कुछ भी नहीं है मेरे जीवन में
अँधेरे के दर्शन नहीं हैं नसीब मेरे नेत्रों को
पर तुम्हारे जीवन में
साथ-साथ रहता है प्रकाश–अंधकार का बोध
बन्द किए अगर मैंने अपने नेत्र
तब भी चारों ओर विस्तार रहेगा
प्रकाश के बोध का
इसीलिए मांगते हैं तुम से
मेरे प्रकाशमय हाथ
अंधकार की भिक्षा…… ।

उसी समय मे
मैं ठणठणमारी
सूरज की याचना के कारण
हजार हजार आश्वासनों से स्पंदित होकर
अपने जीवन के अंधकार में
सूर्य के प्रकाश को
अपने आपमें समाहित करते हुए
जी रहा हूं
एक सम्राट की तरह।

Shashi Sadan
1st Flor, Mundirel
Vasco Da-Gama
GOA–403802

मौसम

केदारनाथ कोमल

बदल गया मौसम

रोये–रोये/सावन–भादों/रोये कितना कम
सोये–सोये/सदियों सोये/ सोये कितना हम

भटके,भटके/कितने आईने चटखे/फिर भी मिले न तुम
टूटे–टूटे/कितने सपने टूटे/फिर भी/आंख हुई न नम

लुटे-लुटे हम / फटे-फटे हम / फिर भी / फिर भी / हुए न सपना हम
रूठा तन-मन/ताक धिनाधिन/स्वयं गीत हैं। फिर क्यों/कैसा गम

बदल गया मौसम

एल–१/५५ बी, डी०डी०ए० फ्लैट्स
कालका जी, नई दिल्ली–११००१९